भाषा और व्याकरण

भाषा:-भाषा उस साधन का नाम है, अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर या पढ़कर प्रकट करने के साधन को "भाषा" कहते है ।

जैसे-हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा, तमिलभाषा, तेलुगु भाषा, पंजाबी भाषा आदि ।

भारत की मुख्य भाषाएँ

भारत में बहुत सी भाषाएँ बोली जाती है । इन में से मुख्य भाषाएँ २२ है । ये २२ भाषाएँ संविधान में भारत की मुख्य भाषाएँ मानी गई हैं । १. हिन्दी, २. उर्दू, ३. काश्मीरी, ४. डोगरो, ५. पंजाबी, ६. असमी, ७.बंगला, ८. उडिया, ९. मराठी, १०. गुजराती, ११. तमिल, १२. तेलुगु, १३. कन्नड, १४. मलयालम, १५. संस्कृत, १६. सिंधी, १७. कोंकणी, २८. मणिपूरी, २९. नेपाली, २०. संथाली, २१. मैथिली, २२. बोडो.

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है ।

व्याकरण:- व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भी भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान प्राप्त करते है ।

वर्ण:-वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके खण्ड न हो सके, वर्ण कहलाती है ।

जैसे :- अ, इ, उ, क् च् ट् त् प् ब् म् आदि वर्णों के दो भेद है । १. स्वर २. व्यंजन

स्वर:-जो वर्ण दूसरो वर्णों की सहायता के बिना बोले जाएँ, वे स्वर कहलाते हैं। स्वर २२ है-

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ स्वर के प्रकार. दो है ।

अ ह्रस्व स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा - काल लगता है । ह्रस्व स्वर है - अ, इ, उ, ऋ

आ दीर्घ स्वर: जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं का काल लगता है। दीर्घ स्वर है आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ऑ।

प्लुत-स्वर:- जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्राओं काल लगता है।

जैसे :- आ३, ओ३ , ए३ , इनका प्रयोग पुकारने (बुलाने)। में होता है।

लिखते समय प्लुत का संकेत करने के लिए स्वर के अन्त में३ का अंक लिखते है।

जैसे :- ओ ३म्, आइए ३, आ ओ ३

परन्तु अब यह ३ का अंक लगाने की प्रथा नही रही।

संयुक्त स्वर:- अ + इ = ए, अ + ए = ऐ,

अ + उ = ओ, अ + ओ = औ,

ये संयुक्त स्वर कहलाते हैं।

अनुस्वर:-स्वर के ऊपर जो बिन्दी लगायी जाती है, उसे अनुस्वार कहा जाता है।

जैसे :- अंग

अनुनासिक:- अनुस्वार का कोमल रुप अनुनासिक कहलाता है।

जैसे :- आँखे

विसर्ग :- स्वर से परे जो दो बिन्दियाँ लगायी जाती है। वे विसर्ग कहलाती है।

जैसे :- दु:ख

व्यंजन:- जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना नही बोले जाते, वे व्यंजन कहलाते हैं।

क ख ग घ ङ (क वर्ग)

च छ ज झ ञ (च वर्ग)

ट ठ ड ढ ण (ट वर्ग) स्पर्श

त थ द ध न (त वर्ग)

प फ ब भ म (प वर्ग)

य र ल व ..... अन्तः स्थ

श ष स ह ..... ऊष्म

अघोषः- जिन व्यंजनों के उच्चारण के समय स्वर-तन्त्र में कंपन नही होता है ।

वे हैं - क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स.

घोषः- जिन व्यंजनों के उच्चारण -समय में स्वर-तन्त्र में कम्पन होता ।

वे है - ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, द, ध, न,

ब, म, य, र, ल, व, ह.

अल्पप्राणः जिन व्यंजनों के उच्चारण में प्रश्वास की कम मात्रा लगती है ।

वे है - वर्गों की प्रथम, तृतीय तथा पंचम व्यंजन.

महाप्राणः जिन के उच्चारण में प्रश्वास की मात्रा अधिक लगती है ।

वे हैं - वर्गों के द्वितीय तथा चतुर्थ व्यंजन.

<u>निम्न बिन्दुः-</u> फारसी तथा अंग्रेजी से हिन्दी में आयें कुछ शब्दों तथा हिन्दी के भी कुछ शब्दों के कुछ वर्णो की मूल ध्वनियों का उच्चारण कोमल बनाने के लिए उनके नीचे एक बिन्दी लगायी जाती है । इसे निम्न बिन्दु कहते हैं ।

जैसे -	क	-	कलम	
	ख	-	खाकी	
	ग	-	गम	विदेशी ध्वनियाँ
	ज	-	कागज़	
	फ़	-	फ़ासला	हिन्दी ध्वनियाँ
	ड़	-	पड़ा	

ढ़ - पढ़ी

<u>अर्ध चन्द्र</u> - हिन्दी में अंग्रेजी के कुछ शब्दों को लिखते हुए उनके कुछ स्वरों पर (ॅ) ऐसा चिह्न लगाया जाता है। इसे अर्ध चन्द्र (अर्ध वृत्त) कहते हैं।

जैसे :- डॉक्टर, कॉलिज

हल् का चिह्न :- स्वर से रहित व्यंजनो का ठीक रुप जिस चिह्न से सूचित होता है, उसे हल् का चिह्न कहते हैं।

..... जैसे :- महान्, विद्यान्, राजन्, चित् आदि व्यंजनों का मूल रुप दर्शाते हुए भी उन्हे हल् करके लिखा जाता है।

जैसे क् च् ट् त् प् य् र् ह् - इत्यादि.

<u>मात्रा:-</u> स्वरों के जो चिह्न व्यंजनों से मिलाकर लिखे जाते है, वे "मात्रा" कहलाते है। मात्रा इस प्रकार हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
-	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

बारहखडी

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं क:

- पर बारहखडी में ङ ञ ये दोनों अक्षर नही आते।

संयुक्ताक्षर

क् + र = क्र = क्रम

ग् + य = ग्य = योग्य

ज् + व = ज्व = ज्वाला

त् + य = त्य = त्याग

ण् + ड = ण्ड = दण्ड

द्वित्वाक्षर

क् + क = क्क = शक्कर

त् + त = त्त = कुत्ता

य् + य = य्य = भय्या

च् + च = च्च = बच्चा

इतिहास और व्युत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी में शब्द चार प्रकार के होते हैं-

१. तत्सम शब्द २. तद्भव शब्द ३. देशी शब्द ४. विदेशी शब्द

तत्सम शब्दः- संस्कृत से आये जो शब्द हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते है, वे तत्सम शब्द कहलाते है ।

जैसेः- ग्राम, भूमि, पुस्तक, दंत, शिरस , प्रधानमंत्री, अध्यापक, विद्यालय.

तद्भव शब्दः- संस्कृत के जो शब्द अपना रुप बदलकर हिन्दी में प्रयुक्त होते है।

जैसेः- गाँव, आँसू, दाँत, रात, जीभ,

देशी या देशज शब्दः- जो शब्द दोश की विभिन्न बोलियों या भाषाओ से हिन्दी में लिये गये हैं ।

जैसे :- खुरपा, पैसा, ढोर, रोटी ।

विदेशी शब्दः- जो शब्द अरबी, फारसी, अंग्रेजी, तुर्की, पुर्तगाली, जापानी आदि भाषाओं से हिन्दी में आये है ।

जैसेः- अरबी - अदातल, मालिक, अल्लाह, किस्सा, दुनिया.

फारसी - जमीन, चश्मा, सुराहा, रुमाल, साका.

अंग्रेजी - फीस, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर।

तुर्की - तोप, तमगा, गलीचा,

पुर्तगाली- गिर्जा, पादरी, बाल्टी, तंबाकू,

जापानी- सायोनारा (विदा), हाराकिरी (आत्महत्या)।

रचना और बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं ।

१. रुढ. २. योगिक ३. योगरूढ़.

<u>रुढ़:-</u> जिस शब्द के खण्ड का कोई अर्थ न हो उन्हे रुढ़ शब्द कहते है -

जैसेः- जल, प्याज, दाल, घर, नाक.

<u>योगिकः-</u> जो दो खण्डों के योग (जोड़) से बने हों और दोनों खण्डों का अलग-अलग अर्थ भी हो.

जैसेः- राज पुरुष - राज + पुरुष

सहपाठी - सह + पाठी

सचिवालय - सचिव + आलय

कार्यालय - कार्य + आलय

<u>योगरूढ़:-</u> जो शब्द सार्थक खण्डों के योग से बने हो, किन्तु किसी विशेष अर्थ में प्रसिद्ध हो गये हो ।

जैसेः- पंकज- पंक + ज यह केवल कमल के लिए है।

चारपाई - चार + पाई यह केवल खाट के लिए है।

<u>शब्द विचार</u>

<u>शब्दः-</u> एक अक्षर अथवा एक से अधिक अक्षरों के समुदाय, जिसका कोई अर्थ हो वह ''शब्द'' कहलाता है ।

हिन्दी में विकास की दृष्टी से दो प्रकार के शब्द हमें मिलते है ।

<u>विकारी शब्दः-</u> जो शब्दों पर अर्थ अपना प्रभाव डालता है और उनका रूप परिवर्तित कर देता है , ऐसे शब्दों को विकारी शब्द कहते हैं।

विकारी शब्द चार प्रकार के हैं।

१. संज्ञा, २. सर्वनाम, ३. विशेषण, ४.क्रिया

<u>अविकारी शब्दः-</u> जिन शब्दों पर अर्थ परिवर्तन का कोई प्रभाव नही पडता और वे ज्यों के त्यों अपने रुप में बने रहते हैं, उन्हे अविकारी शब्द कहते हैं।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के हैं ।

१. क्रिया-विशेषण २. सम्बन्धबोधक

३. समुच्चय बोधक ४. विस्मयादिबोधक

संज्ञा (Noun)

<u>परिभाषाः-</u> किसी व्यक्ति, जीव, स्थान, वस्तु, विचार.

भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

<u>उदाः-</u> घोड़ा, गाय, दिल्ली, हिमालय, पढाई आदि।

हिन्दी में संज्ञा पाँच प्रकार के हैं ।

१. व्यक्तिवाचक संज्ञा

२. जाति वाचक संज्ञा

३. भाव वाचक संज्ञा

४. समूह वाचक संज्ञा

५. द्रव्य वाचक संज्ञा

<u>व्यक्तिवाचकसंज्ञाः-</u> (Proper Noun)

जो संज्ञा किसी विशेष मनुष्य, प्राणी, स्थान या वस्तु को बोध कराये इन शब्दों से एक ही व्यक्ति आदि का बोध होता है । इन्हे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

<u>उदाहरमः-</u> राम, हिमालय, दिल्ली, भारत, ताजमहल, रामचरितमानस

गोदावरी, इत्यादि।

जातिवाचक संज्ञा:- जो शब्द सामान्य जाति का बोध करायें । इन शब्दों से उस जाति के सब व्यक्तियों प्राणियों तथा वस्तुओं आदि का बोध होता है ।

उदाहरण:- हाथी, कमल, आम, मेज, लोटा, मक्खी, पर्वत, पुस्तक, इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा:- जो शब्द किसी विचार भाव, गुण, दोष, स्वभाव, दशा, व्यापार, आदि को प्रकट करे उनको "भाववाचक संज्ञा" कहते हैं। इन संज्ञाओं का ज्ञान इन्द्रियों से नहीं, केवल मन से होता है । वे ठोस व्यक्ति या पदार्थ आदि की वाचक नही, बल्कि गुण आदि की वाचक होती है ।

उदाहरण:- प्रेम, मित्रता.

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनाई जाती है।

(क) जातिवाचक संज्ञा से: लडका से लडकपन,
मित्र से मित्रता

(ख) विशेषण से : वीर से वीरता,
सफेद से सफेदी.

(ग) क्रिया से : पढ़ना से पढ़ाई
लड़ना से लड़ाई

(घ) सर्वनाम से : अपना-अपनापन, निज-निजता

(ड) अव्यय से : तेज-तेजी, धीरे-धीरी, नीचे-निचाई

समूह वाचक संज्ञा :-

जिस शब्द से अनेक पदार्थों अथवा प्राणियों के समूह का बोध होता है, उसे समूह वाचक संज्ञा कहते है।

उदाहरण:- सेना, गुच्छा, दल, जन, गण, लोग, जाति, समूह, समुदाय,

वर्ग,कमीटी आदि द्रव्यवाचक संज्ञा। जिस शब्द से किसी द्रव्य का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते ।

उदाहरणः- लोहा, सोना, चाँदी, पेट्रोल, पानी, हवा, धन आदि।

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर आनेवाले शब्दों को सर्वनाम कहते है ।

जैसेः- मै, हम, तुम,तू, आप, वह, यह, कुछ आदि.

सर्वनामों के छः- प्रकार हैं ।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम २. निश्चयवाचक सर्वनाम

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम ४. सम्बन्थ वाचक सर्वनाम

५. प्रश्ववाचक सर्वनाम ६. निज वाचक सर्वनाम

पुरुष वाचक सर्वनामः-

जों सर्वनाम बोलनेवाले, सुननेवाले या जिसके बारे में कुछ कहा जाय, उसके लिए आएँ उन्हे ''पुरुष वाचक सर्वनाम'' कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं ।

१. उत्तम पुरुष

२. मध्यम पुरुष

३. अन्य पुरुष

उत्तम पुरुषः- बोलने या लिखने वाला जिन सर्वनामों का अपने लिए प्रयोग करता है।

जैसे :- मै, हम.

मध्यम पुरुष :- बोलने या लिखने वाला जिस व्यक्ति के लिए बोलता या लिखता है ।

जैसे :- तू, तुम

अन्य पुरुष :- बोलने वाला तथा सुनने वाला जिस अन्य व्यक्ति के विषय में कुछ कहता है ।

जैसे :- वह, वे, यह, ये.

निश्चय वाचक सर्वनाम:-

जिस सर्वनाम से निश्चय व्यक्ति का या निश्चित वस्तु का बोध हो ।

जैसे :- यह, ये, वह, वे

यह आया, वह गया

इस सर्वनाम में अन्य पुरुष आते हैं।

अनिश्चय वाचक सर्वनाम :-

जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति का हो या किसी वस्तु का हो निश्चय नहीं पाया जाय ।

जैसे :- कोई आया या ।

किसी ने कहा ।

कुछ लोग आए ।

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम:-

जो सर्वनाम अन्य उपवाक्य में प्रयुक्त हो कर संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध प्रकट करे ।

जैसे :- जो-सो, जिस-उस, जैसे-वैसे, जिसकी - उसकी

१. जो करोगा सो मरेगा ।

२. जिसकी लाठी उसकी भैंस ।

३. जैसी करनी वैसी भरनी ।

प्रश्नवाचक सर्वनाम:-

किसी व्यक्ति या वस्तु के बारेमें कुछ प्रश्न पूछने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग होता है ।

जैसे :- कौन, क्या, किस, किन

१. कौन शहर जा रहा है ।

२. तुम क्या कर रहे हो ।

३. यह किताब किसकी है ?

४. यह कलम किसका है ?

निज वाचक सर्वनाम:-

स्वयं अर्थ का बोध करानेवाले सर्वनाम को निज वाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे:- अपना, स्वयं, खुद

१. तुम अपने-आप देख लोगे ।

२. हम अपने आप कर लेंगे ।

३. मै आप ही आप जाऊँगा ।

४. जानकी ने वर को स्वयं चुन लिया है ।

५. मै खुद दिल्ली नही गया ।

सर्वनाम के विषय में ध्यान देने की बाते :-

१. सर्वनाम में लिंग के कारण परविर्तन नही होता ।

२. सर्वनामों का सम्बोधन नही होता ।

विशेषण

संत्रा या सर्वनाम की विशेषता को बतानेवाले शब्दों को ''विशेषण'' कहते हैं.

जैसे :- अच्छा, बुरा, गोरा, ग्रामीण दूसरा आदि.

वह मीठा फल है ।

मै छठी कक्षा में पढ़ता हूँ।

विशेष्य :-विशेषण जिसकी विशेषता बताये. उसे विशेष्य कहते हैं ।

जैसे पार्वती के लम्बे बाल है ।

यहाँ पार्वती विशेष्य है ।

२. विशेषण विशेष्य से पहले भी आ सकता है ।

उदाहरणः- मैने सफेद घोडा खरीदा है ।

यह किसका कुत्ता है ?

२. विशेषण विशेष्य के बाद भी आ सकता है ।

उदाहरणः- मुझे चन्द्रमा सुन्दर प्रतीत होता है ।

सेब दो किलो लाना ।

प्रविशेषणः- जो विशेषण शब्द की विशेषता बताये, वह प्रविशेषण कहलाता है ।

उदाहरणः- यह बहुत अच्छा लडका है ।

मनीष बडा शैतान बालक है ।

यहाँ बहुत तथा बडा शब्द प्रविशेषण है ।

विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं .

१. गुमवाचक

२. संख्यावाचक

३. परिमाणवाचक

४. सार्वनामिक

५. सम्बन्धवाचक

गुणवाचकः-

जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण दोष दशा, रंग, आकार, स्थिति (स्था न) आदि का बोध करायें।

जैसे :-

गुण :- अच्छा, भला, सभ्य, शिष्ट, चारु, सुन्दर, नम्र दानी

दोष :- खराब, बुरा, दुष्ट, निर्दय, उद्धत अशिष्ट ।

रंग :- सपेद, नीला, पीला, काला बदरंग, हरा जामुनी

काल :- पुराना (प्राचीन) नया (नवीन) नूतन, क्षणिक दैनिक

स्थान :- लुधियानवी, मद्रासी, जयपुरी, देहलवी

गंध :- सुगंधित, दुर्गधित, खु शबूदार, बदबूदार

दशा :- गीला, सूखा, नमीदार, खस्ता चिकना

दिशा :- पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी, उत्तर-पश्चिमी

आकार :- बौना, लम्बा, गोल, चौकोर, तिकोना, शूलाकार

स्पर्श :- कोमल, कठोर, खुरदरा, नर्म, सख्त

स्वाद :- मधुर, कटु, तिक्त, कषाय.

संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण वस्तु की संख्या बताये ।

जैसे :- चार छात्र, बाहर छात्राएँ, तीन कबूतर, कुछ तोते,

संख्यावाचक के मुख्य दो प्रकार होते हैं ।

१. निश्चित संख्यावाचक

२. अनिश्चित संख्यावाचक

निश्चित संख्या वाचक - जिस से निश्चित संख्य का बोध हो । इसके पाँच भेद हैं -

गुणनावाचक- एक, दो, तीन, पचास, चौथाई,

क्रम वाचक - पहला, दूसरा, सौवाँ आदि ।

आवृत्तिवाचक - दुगुना, दस गुना आदि ।

समुदाय वाचक - दोनों, तीनों, चारों, दसों आदि

प्रत्येक सूचक - हर दूसरे, हर चौथे, प्रत्येक, आदि.

<u>अनिश्चित संख्यावाचक :-</u> जिन से निश्चित संख्या का बोध न हो ।

जैसे - कुछ लोग, सब लोग, कतिपय जन, थोडे से जानवर आदि ।

३. <u>परिमाण वाचक :-</u> जिनसे नाप-तोल का बोध हो इसके दो भेद हैं ।

(अ) निश्चित परिमाण वाचक

(आ) अनिश्चित परिमाण वाचक

निश्चित परिमाण वाचकः-

दो मीटर, कपडा, आठ बीघा, जमीन, एक हेक्टेयर भूमि, सौ ग्राम धनिया आदि।

अनिश्चित परिमाण वाचक :- थोडा दूध, जरा-सा पानी थोडी-सी भूमि आदि।

४. सार्वनामिक विशेषणः- जो विशेषण सर्वनाम से बनें ।

जैसे :- यह घोढ़ा हमेशा जीतता है ।

वह लडकी अच्छा गाती है ।

संबंधवाचकः-

सम्बन्ध कारक के सभी रुप विशेषण ही होते हैं ,

जैसे :- दराश्य का पुत्र, राम की पत्नी, सीता का देवर, भारतीय लोग, विश्व के मनुष्य तुलना की अवस्थाये .

तुलना - वस्तुओं के परस्पर मिलना को तुलना कहते हैं ।

इसकी तीन अवस्थायों होती हैं ।

२. मूलावस्था :-इसमें मूल वस्तु का गुण-दोष ही प्रकट किया जाता है ।

जैसे - रामांजी योग्य बालक है ।

उत्तरावस्थ :- इसमें दो की परस्पर तुलना करके एक को कम या अधिक बताया जाता है ।

जैसे :- विवेक धीरज से अधिक बलवान है ।

उत्तमावस्या :- इन में अनेक की तुलना करके एक को सब से बढ़कर या घटकर बताया जाता है ।

जैसे :- विवेक सब बालकों से अधिक चतुर है ।

संस्कृत शब्दों में उत्तर तथा उत्तम अवस्थाओं को सूचित करने के लिए 'तर' 'तम' प्रत्यय लगाये जाते है ।

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

क्रिया

जिस शब्द से कर्ता के व्यवहार अथवा किसी काम का होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं ।

उदाः-पार्वती गाती है ।

विवेक पढ़ता था ।

वर्षा आयेगी । धीरज लिखता था ।

धातुः-क्रिया के मूल रुप को धातु कहते हैं ।

जैसे :- पढ़, लिख, गा, हँस, सो, रो, ले आदि

क्रिया का सामान्य रुप - धातु से 'ना' लगायें तो क्रिया का सामान्य रुप बन जाता है।

जैसे -पढना, लिखना, गाना, हँसना,

सोना, रोना, लेना आदि.

विशेष - कभी - कभी क्रिया का सामान्य रुप संज्ञा के समान प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणः- शरब पीना बुरा है ।

अधिक खाना अच्छा नही ।

पार्वती का गाना बहुत मधुर है ।

पढ़ना और खेलना दोनों आवश्यक हैं ।

(१) कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं।

१. अकर्मक क्रिया

२. सकर्मक क्रिया

(२) बनावट की दृष्टि से क्रिया के पाँच भेद हैं।

१. प्रेरणार्थक क्रियाएँ　　२. नाम धातु क्रिया

३. संयुक्त क्रिया　　४. सहायक क्रिया

५. अनुकरण वाचक क्रिया

(३) प्रयोग के आधार पर क्रिया के तीन भेद हैं।

१. कर्तृ वाच्य

२. कर्म वाच्य

३. भाव वाच्य

<u>अकर्मक क्रिया:-</u> जहाँ कर्ता के व्यापार का फल कर्ता पर पड़े।

उदाहरण : बालक बाघ से डरता है।

शिशु आराम से सोता है।

वह भागता है।

अकर्मक क्रियाये : दौडना, भागना, होना, हारना, जीतना, हँसना, रोना, सोना, लजाना. क्रोधित. होना, निराश होना, आशान्वित होना आदि क्रियाएँ अकर्मक है।

सकर्मक क्रिया :- जहाँ कर्ता के व्यापार का फलं कर्म पर पडे।

जैसे :- पढ़ना, लिखना, खेलना, खाना, देखना करना, पीना आदि।

नवीन पुस्तक (को) पढ़ता है।

लीला रोटी खाती है।

हम चित्र को देखते हैं।

अपूर्ण क्रिया :-

पूरक संज्ञा या विशेषता के बिना जो क्रिया पूर्ण अर्थ का बोध न कराये, वह अपूर्ण क्रिया कहलाती है ।

जैसे :-

अकर्मक क्रियाये :-

यह है, वह था, मै हूँगा ।

इनमें कुछ कमी है ।

इन्हें पूरकों से पूर्ण करके हम कह सकते हैं ।

यह बालिक है, वह योग्य था, मै सत्यवादी बनूँगा

संयुक्त क्रियाये :- दो या अधिक धातुओं से बनी क्रियाये संयुक्त कहलाती है ।ये कई अर्थों में होती हैं ।

जैसे :- आरम्भ बोधक पढ़ने लगा हूं । (पढ़ना + लगना + होना)

अवकाश बोधक खेलने दो । (खेलना + देना)

नित्यता बोधक :- आया करता है । (आना + करना + होना)

इच्छाबोधक :- बोलना चाहता है । (बोलना + चाहना)

तत्काल बोधक:- (अभी) लिखे देता हूं । (लिखना + देना)

सातत्य बोधक:- लिख रहा है । (लिखना + रहना)

पुनरुक्तार्थक :- खाता - पीता है । (खाना + पीना)

पूर्णताबोधक:- कर डाला (करना + डाला)

अप्रियताबोधक :- आन मरा । (आना + मरना)

अन्यु (फुटकर): (कमर) कस ली । (कसना + लेना)

नामधातु:- धातु से भिन्न शब्द (संज्ञा, सर्वनाम विशेषण आदि) जब क्रिया के रुप में प्रयुक्त होते हैं तो वे "नामधातु" कहलाते हैं ।

ये प्राय:- संज्ञा से बनाये जाते हैं, पर कई बार सर्वनाम तथा विशेषण से भी बनाये जाते हैं।

जैसे :-

	संज्ञा आदि	नाम धातु	क्रिया का सामान्य रुप
संज्ञा	हाथ	हथिया	हथियाना
	झूठ	झूठला	झूठलाना
सर्वनाम	अपना	अपना	अपनाना
विशेषण	गर्म	गर्मा	गर्माना
	सूखा	सूख	सूखाना

<u>प्रेरणार्थक क्रियाये:-</u> जहाँ कर्ता स्वयं किसी काम को न करके अन्य को प्रेरणा दे - किसी अन्य से काम करवाये वहाँ क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है ।

जैसे :- बालक दूध पीता है ।

माता बालक को दूध पिलाती है (प्रथम प्रेरणा)

माता धाय से बालक को दूध पिलवाती है । (द्वितीय प्रेरणा)

सभी प्रेरणार्थक क्रियाये सकर्मक होती हैं । इन में खाना, पीना, देना, सुनना, पड़ना आदि द्विकर्मक होती हैं ।

एककर्मक -

<u>उदाहरण:-</u> धाय बच्चे को सुलाती है ।

माँ धाय से बच्चे को रोटी खिलवाती है ।

<u>द्विकर्मक :-</u> माँ बच्चे को रोटी खिलाती है ।

माँ धाय से बच्चे को रोटी खिलवाती है ।

<u>प्रेरणांर्थक क्रियाये बनाने के नियम:-</u>

१. मूल धातु के अन्त में 'आ' जोडने से प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया बनती है ।

मूलधातु के अन्त में 'वा' जोडने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया बनती है ।

दो वर्णों वाली धातुओं में ए तथा 'ओ' को छोडकर कोई अन्य स्वर यदि दीर्घ

हो, तो उसे ह्रस्व कर दिया जाता है ।

उदाहरणः-

मूझधातु	सामान्य रुप	प्रथमप्रेरण	द्वितीय प्रेरणा
पढ़	पढ़ना	पढाना	पढावाना
दे	देना	दिलाना	दिलवाना
जी	जीना	जिलाना	जिलवाना
पी	पीना	पिलाना	पिलवाना
गा	गाना	गवाना	गवाना
ले	लेना	लिवाना	लिवाना
सो	सोना	सुलाना	सुलवाना
सी	सीना	सिलाना	सिलवाना

अविकारी या अव्यय शब्दः-

जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, आदि के कारण कोई विकार (परिवर्तन) नही होता, या बहुत कम विकार होता है वे अविकारी अथवा अव्यय कहलाते हैं।

ये चार प्रकार के हैं ।

१. क्रिया विशेषण २. सम्बन्ध बोधक

३. समुच्चयबोधक ४. विस्मयादि बोधक

क्रिया विशेषण :- जो शब्द क्रिया की विशेषता बताये, वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरणः- विवेक कल खेलेगा

मै उधर जा रहा हूँ.

वह दिन भार पढ़ता रहता है

क्रिया प्रविशेषणः- जो शब्द क्रिया विशेषण की विशेषण बताता है । तो उसे क्रिया प्रविशेषण कहता है ।

उदा:- घोडा बहुत-तेज दौडता है ।

यहाँ बहुत शब्द ने तेज क्रिया-विशेषण की विशेषता प्रकट की है, अत: बहुत शब्द क्रियाप्रविशेषण है ।

क्रिया विशेषण के भेद :-

इसके पाँच भेद हैं -

१. स्थानवाचक २. कालवाचक ३. परिमाणवाचक

४. रीतिवाचक ५. अवधारक ।

स्थानवाचक:- जो क्रिया की स्थान सम्बन्धी विशेषता प्रकट करें । स्थानवाचक दो प्रकार होते हैं ।

१. स्थितिसूचक २. दिशासूचक

स्थिति सूचक:- यहां, वहाँ, कहाँ, जहाँ, तहाँ आगे. सामने आदि.

दिशा सूचक:- पूर्व की ओर, पश्चिम की तरफ, इधर, उधर, दयीं ओर आदि।

२. काल वाचक क्रिया विशेषण :-

जो क्रिया के होने के समय बताएँ ।

जैसे :- आज, कल, परसो, अभी, थोडी, दर में, जब, तब, कल, दिनभर आदि।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण:-

जो क्रिया के परिमाण को प्रकट करें ।

जैसे :- थोडा, बहुत, कम, अधिक, अल्प, ज्यादा, आदि।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण:-

जो क्रिया की रीति का संकेत करें ।

जैसे :-एसे, कैसे, जैसे, वैसे जल्दी, साधारणत: यो. अचानक आदि.

अवधारक:- जो क्रिया की सीमा को बताती है उसे अवधारक कहते हैं।

उदाहरण:- भी, भर, तक, ही आदि ।

सम्बन्धबोधक :-

जो शब्द वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सूचित करते हैं उन्हे सम्बन्ध बोधक शब्द कहते हैं।

जैसे:-

नदी के किनारे मंदिर है ।

इसवाक्य में के किनारे संबंध सूचक है ।

इस वाक्य में के किनारे संबंध सूचक है। क्यों कि वह 'नदी' संज्ञा का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जोडता है ।

उदाहरण:- विवेक कमरे के अन्दर सोता है

सुप्रिय मंदिर के बाहर बैठी है ।

जैसे:- की तरह, के बिना के लिए, के पास, के निमित्त, के बदले, की भाँति के जैसे, के विरूद्ध, के अनुकूल, के आधीन,के साथ, पयन्ति, सा, पर, तक आदि।

समुच्चय बोधक शब्द-

जो शब्द दो शब्दों, दो संज्ञाओं या दो वाक्यों को मिलाने वाला, जोडने वाले को ही समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं ।

जैसे :- आँधी आई और पानी बरसा ।

यहाँ और शब्द समुच्चय बोधक है ।

वह पढ़ा लेकिन उत्तीर्ण नही हुआ ।

कुछ उदाहरण:- और, तथा, एवं, या, व, परन्तु बल्कि, इसलिए, यदि, चाहे, पर. मानो आदि।

विस्मयादि बोधक:-

विस्मयादि बोधक शब्द हर्ष, शोक, भय, घृणा, साहस हैरानी आदि भावों को सहसा प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होते हैं ।

जैसे :- ओह, धन्य, आह, छि: अरे, दत्तेरी, धिक, आहा, वाह! आदि।

उदाहरण:- ओह! राम तुम ने यह क्या कर दिये ।

धन्य है भारत! जहाँ, नेहरू जैसे महापुरुष उत्पन्न हुए ।

Prepared by :
B. RAMA MOHAN
Cell: 9494684876